Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December-2024 | Page 88-92

# भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्य और चरित्र निर्माण का महत्व

डॉ.अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक(हिन्दी)
कलिंगा विश्वविद्यालय(छत्तीसगढ़)
ajay.shukla@kalingauniversity.ac.in

**प्रस्तावना:**

भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्य और चरित्र निर्माण की स्थापना पर विश्लेषणात्मक अध्ययन एक महत्वपूर्ण शोध विषय है। यह अध्ययन भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास करता है जो जीवन मूल्यों के आदर्श और चरित्र निर्माण की मूल बुनियाद रखते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से हम उन नैतिक और धार्मिक मूल्यों को पहचानने का प्रयास करेंगे जो भारतीय समाज को समृद्धि, सम्मान, और एक सजीव संस्कृति के दिशानिर्देश में मदद कर सकते हैं।

**1.1 परिचय:**

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और विशाल संस्कृतियों में से एक मानी जाती है। इसमें धर्म, दर्शन, संस्कृति, साहित्य, कला, और विज्ञान के विभिन्न पहलू शामिल हैं। भारतीय संस्कृति ने हमेशा से जीवन मूल्यों और चरित्र निर्माण को उच्चतम प्राथमिकता दी है। यह अध्ययन हमें भारतीय संस्कृति के विविधता, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, और सबके बीच विद्वेष और समानता के मध्य नैतिक मूल्यों को समझने में मदद करेगा।

1.2 उद्देश्य:

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्यों और चरित्र निर्माण की स्थापना के आदर्श को गहराई से जानना है। हम विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं, शास्त्रों, और ग्रंथों को छानेंगे जो भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को प्रदर्शित करते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से हम उस विचारधारा का निरीक्षण करेंगे जो जीवन मूल्यों और चरित्र निर्माण को बढ़ावा देती है और समाज को एक सजीव और सद्गुणी नागरिकता की दिशा में प्रेरित करती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December-2024 | Page 88-92

### 1.3 अध्ययन के प्रमुख बिंदु

यह अध्ययन भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्यों और चरित्र निर्माण की स्थापना को प्रभावित करने वाले विभिन्न पहलुओं का गहन विश्लेषण करेगा। निम्नलिखित बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की जाएगी:

#### 1.3.1 भारतीय संस्कृति के मूल तत्व और दार्शनिक परंपराएं

भारतीय संस्कृति अपने प्राचीन और गहरे दार्शनिक मूल्यों पर आधारित है, जो वेदों, उपनिषदों, गीता, और अन्य धर्मग्रंथों में निहित हैं। इस संस्कृति की नींव सत्य, अहिंसा, धर्म, करुणा और आत्म-साक्षात्कार पर आधारित है। योग, ध्यान और वैदिक ज्ञान के माध्यम से आत्मा और ब्रह्म के संबंध की खोज भारतीय दर्शन का एक प्रमुख हिस्सा है। यह अध्ययन इन दार्शनिक परंपराओं का विश्लेषण करेगा और उनकी सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव की जांच करेगा।

#### 1.3.2 भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्यों के प्रति आदर्श

भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्यों को उच्च आदर्शों के रूप में देखा जाता है। सत्य, दया, सहिष्णुता, नम्रता और परोपकार जैसे मूल्य न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक हैं, बल्कि समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा इन आदर्शों को एक दिशा प्रदान करती है। इस बिंदु के अंतर्गत इन आदर्शों की प्रासंगिकता और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग का अध्ययन किया जाएगा।

#### 1.3.3 चरित्र निर्माण के विभिन्न मार्ग और संस्कृति के प्रभाव

चरित्र निर्माण भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, जो नैतिकता, आत्मानुशासन और आत्म-परिष्कार के मार्ग पर आधारित है। यह शिक्षा, समाज, धर्म, और परंपराओं से प्रभावित होता है। भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग और कर्म मार्ग जैसे आध्यात्मिक रास्ते व्यक्तियों के चरित्र को मजबूत बनाने में सहायक होते हैं। इस अध्ययन में यह देखा जाएगा कि भारतीय संस्कृति कैसे व्यक्ति को समाज के लिए आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा देती है।

#### 1.3.4 शिक्षा, समाज और परिवार के योगदान का अध्ययन

शिक्षा, समाज, और परिवार का जीवन मूल्यों और चरित्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण योगदान है। पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक शिक्षा प्रणाली तक, ज्ञान का प्रसार भारतीय संस्कृति के मूल्यों को बढ़ावा देता रहा है। परिवार को व्यक्ति की पहली पाठशाला माना गया है, जहां नैतिकता, अनुशासन और प्रेम की शिक्षा दी जाती है। समाज और समुदाय भी नैतिक विकास में भूमिका निभाते हैं। इस बिंदु के तहत यह अध्ययन किया जाएगा कि कैसे इन सभी कारकों ने मिलकर एक सशक्त और नैतिक समाज के निर्माण में योगदान दिया है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December-2024 | Page 88-92

इन बिंदुओं के माध्यम से अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि भारतीय संस्कृति न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक स्तर पर भी कैसे जीवन मूल्यों और चरित्र निर्माण में योगदान देती है।

**2.1 सनातन धर्म और धर्मशास्त्र:**

सनातन धर्म भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है, जिसे "सनातन" शब्द से ज्ञात किया जाता है, जिसका अर्थ है "शाश्वत" या "अनन्तकालीन"। यह धर्म जीवन के सभी पहलुओं, धर्मिक आचार-व्यवहार, नैतिकता, और मोक्ष के मार्ग के संबंध में निर्दिष्ट नियमों का पालन करता है। सनातन धर्म के विविधता में धर्मशास्त्र का महत्वपूर्ण योगदान है, जो इस धर्म की नियमितता, शिष्टाचार, और नैतिक दिशा का प्रबंधन करता है। धर्मशास्त्र में विभिन्न विषयों पर शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए नियम, सिद्धांत, और प्रत्याय का वर्णन होता है।

2.2 वेद, उपनिषद, और स्मृतियों का योगदान:

वेद भारतीय संस्कृति के मूल धार्मिक ग्रंथ हैं, जिन्हें अनादि काल से प्रमाणित किया जाता है। वेद विविध ज्ञान के स्रोत हैं, जिनमें धर्म, यज्ञ, गायन, और ज्योतिष जैसे विभिन्न विषयों पर ज्ञान है। वेदों के बाद आये उपनिषद संसार के अद्भुत रहस्यों, आत्मज्ञान, और ब्रह्मज्ञान की अद्भुत शिक्षाओं को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं। स्मृतियां भारतीय संस्कृति के वेदों के उपांश हैं जो समाज के व्यवहार, नैतिकता, और आचार-व्यवहार के लिए मार्गदर्शन करती हैं। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, और रामायण-महाभारत जैसे ग्रंथ इस समृद्धि का उदाहरण हैं।

2.3 कर्म, धर्म, और मोक्ष की प्रासंगिकता:

भारतीय संस्कृति में कर्म, धर्म, और मोक्ष के अविभाज्य संबंध का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्म का मूल अर्थ है क्रिया या एक्शन, और संसार में किये जा रहे सभी कर्मों के कारण मनुष्य को फल भोगना पड़ता है। धर्म भारतीय संस्कृति में सदाचार, कर्मकांड, और नैतिक नियमों का पालन करने की प्रेरणा देता है। मोक्ष, अर्थात् मुक्ति, आत्म-मोक्ष और परम-मोक्ष, भारतीय संस्कृति में आत्म-साक्षात्कार का महत्वपूर्ण अवसर है, जिसके लिए साधक नैतिक और आध्यात्मिक साधना करता है। मोक्ष की प्राप्ति भारतीय संस्कृति में जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य मानी जाती है।

**3.1 अहिंसा और सत्य:**

भारतीय संस्कृति में अहिंसा (नैरन्दरिता) और सत्य (सत्य) को जीवन मूल्यों के प्रति महत्वपूर्ण आदर्श माना जाता है। अहिंसा का अर्थ है दूसरों को किसी भी प्रकार का हानि नहीं पहुंचाना और

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December-2024 | Page 88-92

एकत्रित होकर संसार को प्रेम और शांति से भरना। सत्य का पालन करने से असत्य और झूठ के प्रति अवगत होने में मदद मिलती है, जिससे व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है। भारतीय संस्कृति में अहिंसा और सत्य को महान सिद्ध महात्माओं जैसे महावीर, गौतम बुद्ध, महात्मा गांधी और भगवान महावीर के जीवन में उच्च मान्यता दी जाती है।

3.2 धर्मिक सहिष्णुता और समझौता:

धर्मिक सहिष्णुता और समझौता भारतीय संस्कृति में भाईचारे और विश्वस्तता के आदर्श को प्रतिष्ठित करते हैं। धर्मिक सहिष्णुता का मतलब है सभी धर्मों के प्रति समान आदर्श और सम्मान रखना और विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को समझने का प्रयास करना। समझौता और मधुर वाणी के माध्यम से समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करना हमारे समाज में सद्भावना और समृद्धि के मार्ग को खोलता है।

3.3 परिवार, समाज, और प्रकृति के प्रति देखभाल:

भारतीय संस्कृति में परिवार, समाज, और प्रकृति के प्रति सम्मान और देखभाल का महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार भारतीय संस्कृति में एक आध्यात्मिक इकाई के रूप में देखा जाता है, जिसमें प्रेम, सम्मान, और सहायता के संबंध नजर आते हैं। समाज में सभी का साथीभाव रखना, दुर्भावना को दूर करने का प्रयास करना और समाज के हित को प्राथमिकता देना भी भारतीय संस्कृति के मूल मूल्यों में से एक है। प्रकृति के प्रति सच्चा सम्मान और उसके संतुलन को बनाए रखना भी भारतीय संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि प्रकृति हमारे जीवन का स्रोत है और हमारी समृद्धि और कल्याण के लिए जरूरी है।

**4.1 शिक्षा और अध्यात्म:**

भारतीय संस्कृति में शिक्षा और अध्यात्म के अभिवृद्धि का महत्वपूर्ण योगदान चरित्र निर्माण की स्थापना में होता है। शिक्षा से व्यक्ति को नैतिकता, विवेक, और सही और गलत के अंतर को समझाया जाता है। अध्यात्म से व्यक्ति अपने आंतरिक स्वरूप को जानता है और आत्म-विकास का मार्ग तैयार करता है। भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा शिक्षा और अध्यात्म का अनुशासन पारंपरिक रूप से विशिष्ट तत्वों और विचारधारा को समर्थन करता है।

4.2 गुरु शिष्य परंपरा:

भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा चरित्र निर्माण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गुरु शिष्य के संबंध में श्रद्धा, सम्मान, और समर्पण की भावना ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाया है। गुरु शिष्य परंपरा में गुरु अपने शिष्य को धार्मिक शिक्षा, नैतिकता, और अध्यात्म के

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December-2024 | Page 88-92

मार्ग पर मार्गदर्शन करते हैं। शिष्य अपने गुरु की उपासना करके उनके पास से धार्मिक ज्ञान प्राप्त करते हैं और उसे अपने जीवन में अमल में लाते हैं।

4.3 धार्मिक कथाएं और महाकाव्य:

भारतीय संस्कृति में धार्मिक कथाएं और महाकाव्य भी चरित्र निर्माण की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इनमें विभिन्न चरित्रों के जीवन के उदाहरण, उनकी धार्मिकता, और नैतिक मूल्यों को दर्शाया जाता है। रामायण, महाभारत, पुराण, और भगवद्गीता जैसे ग्रंथ भारतीय संस्कृति की धार्मिकता और नैतिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार का माध्यम हैं और इन्हें चरित्र निर्माण में अद्भुत महत्व मिलता है। ये कथाएं और महाकाव्य व्यक्ति के मन, विचार, और व्यवहार को सुधारने और उच्चतम मूल्यों को अपनाने में मदद करते हैं।

**5.1 वेदांत दर्शन और आध्यात्मिक जीवन का अर्थ:**

वेदांत भारतीय संस्कृति के प्राचीन दर्शनों में से एक है, जिसमें आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान के विषय में विस्तृत चिंतन किया जाता है। वेदांत में कहा जाता है कि आत्मा (जीवात्मा) और परमात्मा (ब्रह्म) एक हैं, और व्यक्ति अपने सार्वभौमिक स्वरूप को जानकर संसार के बन्धन से मुक्त हो सकता है। वेदांत के अनुसार, आध्यात्मिक जीवन का अर्थ अपने आंतरिक विकास, साधना, और सच्चे स्वरूप के प्रति उत्साहपूर्वक आग्रह करना है। वेदांत दर्शन ने आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाने और व्यक्ति के जीवन को अर्थपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

5.2 महात्मा गांधी का आध्यात्मिक दृष्टिकोन:

महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता थे, जिन्होंने आध्यात्मिकता को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना। उनके विचार में आध्यात्मिकता, सत्याग्रह, और अहिंसा एक अभिव्यक्ति थीं जो समाज को सद्भावना और अखंडता की दिशा में प्रेरित करती थीं। गांधीजी का आध्यात्मिक दृष्टिकोन उन्हें समस्त मानवता के लिए भाईचारे और समरसता के संदेश का प्रतीक बनाता था। उनके संघर्ष में धार्मिकता के मूल्यों और नैतिक अदर्शों का प्रमुख स्थान था जिससे भारतीय समाज को स्वतंत्रता की दिशा में प्रेरित किया गया।

5.3 भारतीय नैतिक विचारधारा के साथ आधुनिक समाज:

आधुनिक समय में भारतीय नैतिक विचारधारा के मूल्यों को संरक्षित रखने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। भारतीय संस्कृति में दिव्यता, समरसता, सहिष्णुता, और साधुता जैसे मूल्यों का समर्थन करने से आधुनिक समाज में सद्भावना, समाजिक समरसता, और सबको सम्मान देने की भावना उत्पन्न होती है। भारतीय संस्कृति के प्राचीन विचारों को आधुनिकता के साथ मिश्रित

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December-2024 | Page 88-92

करके समाज के विकास के लिए एक समर्थ रूप में उपयोग किया जा सकता है। धार्मिक कथाएं, ध्येय ग्रंथ, और संतों के उपदेशों का समाज में प्रचार-प्रसार किया जाना भारतीय संस्कृति के मूल्यों को जीवंत रखने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

**6.1 समाज में सद्भावना और शांति का स्थायीकरण:**

भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्य और चरित्र निर्माण के प्रभाव से समाज में सद्भावना और शांति का स्थायीकरण होता है। धार्मिकता, समरसता, और नैतिकता के मूल्यों के प्रचार-प्रसार से लोग एक-दूसरे के साथ सद्भावना और सम्मान से रहने की भावना से प्रेरित होते हैं। समाज में भारतीय संस्कृति के मूल्यों का पालन करने से लोग विभिन्न समस्याओं को समझने के लिए तैयार होते हैं और शांति के माध्यम से समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करते हैं।

6.2 धार्मिक समृद्धि और भारतीय चिंतन की गरिमा:

भारतीय संस्कृति के मूल्यों के प्रभाव से धार्मिक समृद्धि होती है और भारतीय चिंतन की गरिमा बढ़ती है। लोग धार्मिकता, आध्यात्मिकता, और नैतिकता के मार्ग पर चलकर अपने जीवन को समृद्ध बनाते हैं और समाज में उच्चतम मूल्यों को प्रशस्त करते हैं। धार्मिक समृद्धि से समाज का भलाई के लिए विकास होता है और भारतीय संस्कृति की चिंतन शैली से लोग आत्म-सम्मान, समृद्धि, और समाज में समरसता का अनुभव करते हैं।

6.3 आध्यात्मिक विकास के माध्यम से व्यक्तिगत समृद्धि:

भारतीय संस्कृति के मूल्यों के प्रभाव से आध्यात्मिक विकास के माध्यम से व्यक्तिगत समृद्धि होती है। व्यक्ति अपने आंतरिक स्वरूप को जानता है, अपने धार्मिक और नैतिक मूल्यों का पालन करता है, और आत्म-विकास के मार्ग पर प्रागतिशीलता का समर्थन करता है। आध्यात्मिक विकास से व्यक्ति मानसिक और शारीरिक रूप से समृद्ध होता है और समाज में अधिक सकारात्मक योगदान करता है।

निष्कर्ष और सारांश:

भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्य और चरित्र निर्माण की स्थापना ने समाज में सद्भावना, शांति, धार्मिक समृद्धि, और भारतीय चिंतन की गरिमा को प्रभावित किया है। यह मूल्य और नैतिक अदर्शों के प्रचार-प्रसार से समाज में भाईचारे, समरसता, और सहिष्णुता के संदेश का प्रतीक बना है। इसके माध्यम से लोग आत्म-सम्मान, समृद्धि, और सद्भावना से युक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित होते हैं और समाज को विकास की दिशा में अग्रसर करते हैं। आध्यात्मिक विकास के माध्यम से व्यक्ति की व्यक्तिगत समृद्धि होती है जो समाज के समृद्धि में योगदान करती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December-2024 | Page 88-92

**संदर्भ:**

1. चटर्जी, एस. सी., & दत्ता, डी. एम. (2007)। एन इंट्रोडक्शन टू इंडियन फिलॉसफी। नई दिल्ली: रुपा पब्लिकेशंस।
2. दास, जी. (2009)। द डिफिकल्टी ऑफ बीइंग गुड: ऑन द सबटल आर्ट ऑफ धर्म। नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
3. डोनिगर, वेंडी। (2010)। द हिंदूज़: एन अल्टरनेटिव हिस्ट्री। न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. गुप्ता, आर. के., & सिंह, एस. पी. (2013)। भारतीय दर्शन से चरित्र निर्माण में सांस्कृतिक प्रभाव। जर्नल ऑफ बिजनेस एथिक्स, 114(1), 109-123।
5. कपूर, पी. (2010)। इंडियन वैल्यूज एंड एथोस। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
6. महादेवन, टी. एम. पी. (2008)। आउटलाइन ऑफ हिंदू फिलॉसफी। चेन्नई: यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास।
7. शर्मा, अ। (2003)। आधुनिक हिंदू विचार में सार्वभौमिक धर्म की अवधारणा। न्यूयॉर्क: पलग्रेव मैकमिलन।
8. सिंह, एस. के। (2012)। भारतीय समाज में चरित्र निर्माण में परिवार और शिक्षा की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एथिक्स, 18(2), 42-49।
9. स्वामी विवेकानंद। (2006)। स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं और दर्शन। कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
10. तिलक, बी. जी. (2011)। गांधी के अनुसार गीता। अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट।